ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

eYy fo|k@d|'rh & dkuiqj ds lUnHkZ esa

MkO uhye 'kDyk
असि0 प्रोफेसर (शा0शि0)
डी0बी0एस0 कालेज, कानपुर

शारीरिक शिक्षा शारीरिक गतिविधियों द्वारा बालक के समग्र व्यक्तित्व विकास हेतु दी जाने वाली शिक्षा है । कुछ विद्वान शारीरिक शिक्षा को शरीर की शिक्षा बताते हैं। परन्तु यह कथन अस्पष्ट एवं अधूरा प्रतीत होता है । बालक जन्म लेते ही हाथ पैर चलाना शुरू कर देता है, जिससे उसके शरीर क सभी अंगों का सर्वांगीण विकास होना प्रारम्भ हो जाता है। बड़े होने पर बालकों को खेलकूद के प्रति रूचि जाग्रत होती है, जो स्वाभाविक और प्रकृति निष्पन्न है। खेलकूद में भाग लेने से बालकों का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। इस प्रकार शारीरिक शिक्षण/ प्रशिक्षण का लक्ष्य स्वास्थ्य के बारे में ज्ञान प्रदान एवं स्वास्थ्य के प्रति सजग और क्रियाशील बनाना एवं देश को स्वस्थ नागरिक प्रदान करना प्रमुख लक्ष्य होता है।

शरीर को स्वस्थ रखने के लिये प्राचीन समय से अनेक क्रीड़ाएँ /खेल प्रचलित थे। इन खेलों/ क्रीड़ाओं के प्राप्त अनेक भेद मिलते है। पहले वे खेल जो मनोविनोदार्थ खेले जाते है। दूसरी श्रेणी में वे खेल हैं। जो प्रेक्षकों की प्रसन्नता के लिये हों, तीसरी श्रेणी के खेल धर्मोत्सव प्रधान तथा चौथी श्रेणी के खेल मिश्रित होते थे। प्राचीन भारतीय शिक्षा में चौंसठ कलाओं की शिक्षा का जिक्र व्यापक रूप से मिलता है। शुक्राचार्य के शुक्रनीतिसार, केलादि नरेश श्री रासव राजेन्द्र के शिवतत्व रत्नाकंर वात्स्यायन, प्रणीत कामसूत्र, (जय मंगल की टीका) में चौंसठ कलाओं का सविस्तार वर्णन है। शिवतत्व रत्नाकर में मल्ल, कामसूत्र में क्रीड़ा कौशल व व्यायाम क्रिया शुक्रनीतिसार में मल्लों का उल्लेख मिलता है। प्राचीन शिक्षा व क्रीड़ाओं/मल्ल विद्या में शरीर संधियों पर आघात करते हुये भिन्न–भिन्न अंगो को खींचते हुये दो मल्लो, पहलवानों का युद्ध (कुश्ती) कला है। इस कला में भारत प्राचीन समय से अब तक सर्वश्रेष्ठ रहा है। श्रीकृष्ण ने कंस की सभा में चापूर मुष्टिक आदि प्राचीन

मल्लों को इस कला में पछाड़ा था। भीमसेन और जरासन्ध की कुश्ती कई दिनों तक चलने का उल्लेख भी महाभारत में मिलता है। बाद में गामा जैसे विश्वविजयी मल्लों से देश को बहुत प्रसिद्धि प्राप्त हुई। पंजाब, मथुरा की भांति ही कानपुर भी इस कला में प्रवीण रहा है। शहर में अखाड़ों और पहलवानों की पर्याप्त संख्या आज भी देखी जा सकती है।

पश्चिमी देशों के पहलवानों और उनकी उपलब्धि का प्रचार देखकर पं0 मोतीलाल नेहरू प्रसिद्ध भारतीय पहलवान इमाम बक्श (विश्व विजेता पहलवान गामा का भाई) को यूरोप ले गये ताकि वहॉ के पहलवानों से वह इमाम बक्श से हाथ मिला सकें सौभाग्यवंश वह इस बात का एहसास कराने में सफल रहे कि भारत में भी दमखम के पहलवानों की कमी नहीं है। पं0 प्रताप नारायण मिश्र के ब्राहम्ण पत्र 15 सितम्बर–हरिश्चन्द्र सम्वत 1 (सन् 1885) के अंक में दृष्टव्य है।

सबको ज्ञात है कि यहॉ प्रतिवर्ष तीन दिन मल्ल–लीला हुआ करती है । परन्तु अबकी बार हमारे नगर की शोभा बाबू बिहारी लाल परोपकारी महोदय श्रीयुत पं0 मोतीलाल नेहरू, श्रीयुत जानकी नाथ चक, श्रीयुत लाला गया प्रसाद प्रभृति सज्जन महाशयों के उत्साह से ओ0आर0आर0 स्टेशन के पास 11, 14 और 16 अगस्त को तीन दंगल औरा भी हुए जिसमें प्रबन्ध अथवा दर्शकों को आगत स्वागत तथा मल्लों को पारितोषिक प्रदान अत्योत्तम रीति से हुआ । हारे हुओं को भी मार्ग – संबल एवं कोड़ लिख जाने पर भोजन दान यह दो बातें विशेष हुई जैसे तत्समय दंगल में कभी नहीं सुनी गई । यह सब कोई मानता है कि धनवान और विद्वान की भॉति बलवान भी देश की शोभा होते हैं । किसी रीति से पहवानों को सहाय करके उनका उत्साह बढ़ाना देश की शारीरिक उन्नति में एक परमोपयोगी काम हैं। ऐसा करने वाले वास्तव में परोपकारी देश हितैषी एवं भारत माता के सच्चे सुपुत्र हैं। हम खुशामदी भाट नहीं है। यह किसी सद्व्यक्ति के समुयोग पर धन्यवाद देने से रूक भी नहीं सकते। सुनते हैं कि लोगों ने विघ्न डालने पर भी कमर बॉधी थी पर अच्छे कामों में तो ईश्वर सहाय होता है । किसी के किये कुछ न हुआ ।

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

उपरोक्त समाचार कानपुर के मल्ल – लीला में पंडित मोती लाल नेहरू का भी नाम ध्यान देने योग्य है । पंडित मोती लाल नेहरू सन् 1883–86 तक कानपुर में ही वकालत करते थे। पंडित पृथ्वीनाथ चक के साथ पंडित जानकी नाथ चक उनके बड़े भाई थे। लाला गया प्रसाद प्रसिद्ध व्यापारी थे, जिनसे गया प्रसाद लेन मोहल्ला आबाद है। पंडित मोती लाल नेहरू के कानपुर प्रवास की आबोहवा में ही दंगलों और पहलवानों से प्रेम का शौक हुआ और यूरोप तक पहलवानों की धूम मचाने के लिये भारतीय पहलवान ले गये थे । ब्राह्मण संपादक पंडित प्रताप नारायण मिश्र का भी दंगल और कुश्ती प्रेम महत्पपूर्ण है । मिश्र जी ने दंगल खण्ड शाीर्शक में एक काव्य पुस्तक भी लिखी और ब्राह्मण पत्र में उसका विज्ञापन दिया ।

हमनें कानपुर के दंगल की एक पोथी बनाई है । लोग तो एक रूपया, आठ आना और चार आना देतें हैं। और ऊपर से धक्का खातें हैं तब मजा पातें है। हम केवल चार पैसा मूल्य और आठ पोथी के दो पैसा डाक महसूल में तमाशा दिखा देने का दावा रखते हैं । अगले पिछले दंगलों का मजा देखो, आप ही गाओ, हॅसो और प्रसन्न हो। पर एक आना देने पड़ेगें । उसके ग्राहक यहॉ भी बहुत हो गयें है । इससे कहते है जल्दी करों नहीं न पाओगे ।

पंडित प्रताप नारायण मिश्र की दंगल खण्ड़ पुस्तक सन् 1887 के सकरारी दंगल और इस दंगल के हुए झगड़े को लेकर लिखी गई है।

कानपुर शहर में पहलवानी दंगल/ अखाड़े सब कुछ बहुत पहले से चला आ रहा है । सन् 1840 में पंडित मनीराम पाण्डेय रूस्तमेहिन्द के चेला छतई महाराज ने अखाड़े की एक पंचायत कायम की और उसकी बैठकें होने लगी। इन बैठकों में ही निर्णय हुआ कि नया खलीफा बनाया जाय, नये खलीफा के लिये उस्ताद लोग परीक्षा लेते दावों की तोड़ आदि पूॅछते और फिर उसे खलीफा की पदवी दी जाती। पदवी मिलने पर वह सवासेर मिठाई मिश्री का कूजा प्रत्येक अखाड़े में भेजता। सन् 1950 आते–आते इसमें परिवर्तन आया, उस समय खलीफा आधा सेर जलेबियॉ भेजने लगे। इसे अखाड़े की भाषा में डलिया कहते है।

जो अखाड़ा पहलवानी में नियम विरूद्ध काम करता उसकी डलिया बन्द कर दी जाती और तमाम पगड़ी बन्द खलीफा द्वारा नये खलीफा को पगड़ी बॉध कर उसे अखाड़े का खलीफा घोषित किया जाता और अखाड़े का निशान भी दिया जाता था जो जुलूस आदि में आगे लेकर चला जाता था । स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय शहर भर में लगभग 50 पगड़ी बन्द खलीफाओं के अखाड़े थे। लगभग इसी संख्या में शौकिया व निजी अखाड़े भी थें।

कानपुर शहर में पगड़ी बन्द अखाड़ों में ज्यादातर अखाड़े छतई महाराज के घराने से थे । कुछ करम अली व जंगली खलीफा के घराने के और कुछ एक अपने स्वयं के एकल घराने थे। अधिकांश अखाड़े पटकापुर नाचघर, सिरकी मोहाल, बेगमगंज, कर्नलगंज मोहल्ले में थे । इन अखाड़ों में जोर करने बाहर से भी पहलवान आते थे।

कानपुर में वर्षा ऋतु के दिनों में दंगल का विशेष आयोजन होता, उनमें से नागपंचमी, श्रावणी और बुढ़वा मंगल के पर्व पर विशेष दंगलों का आयोजन किया जाता था। और आज भी होते है।

कानपुर के प्रमुख पहलवानों में धुन पहलवान थे जो विश्व विजेता गामा पहलवान से प्रारम्भिक दिनों में कुश्ती लड़े और जीते, 16 रूपये इनाम पाया। गामा तो रूस्तमेहिन्द हो गये परन्तु धुन – धुन ही बने रहें । गामा जब भी शहर आते बादाम आदि की ठण्डाई और 20 – 25 रूपये देकर खातिर करते और कहते पहलवान हम तो तुम से हार चुके हैं। महादेव, मंगल, पिस्तौरी, टुण्डे, सैफुल्ला, मिक्सर, कमरूद्दीन, अद्धा आदि पहलवानों ने कानपुर शहर में काफी नाम कमाया और शहर के नाम को रोशन किया ।

भारतवर्ष के प्रमुख पहलवानों में गुलाम काफी प्रसिद्ध रहे। गुलाम पहलवान को पं0 मोतीलाल नेहरू सन् 1889 में पेरिस ले गये । यह पहला अवसर था कि यूरोपीय देशों में भारतीय पहलवान पहली बार लड़े। गुलाम ने यूरोपीय पहलवानों को पटककर (हराकर) भारतीय पहलवानी/कुश्ती की धूम मचा दी । गुलाम के समय के ही किकड़ सिंह, रहीम सुल्तानीवाला, कल्लू गामूवाला, विद्दो पण्डित,

करीमबक्श, सियालकोटिया, गुप्ता सिंह, इक्का गामा, गंगा ब्राह्मण, भूटान सिंह गामा के पूर्ववर्ती प्रसिद्ध पहलवान थे। गंगा व भूटान सिंह सन् 1907 में इग्लैण्ड गये और कुछ समय वही रहकर यूरोप के नामी पहलवानों को हराया फिर आस्ट्रेलिया जाकर कुश्तियॉ लड़ी ।

सन् 1909 से पहलवानी में गामा युग का प्रारम्भ हुआ। गामा पंजाबी मुसलमान था और लाहौर के दंगल से उसकी कीर्ति बढ़ने लगी। इस प्रकार वह पहलवानो में केन्द्रित हो गया और विश्व विजेता भी शीघ्र बन गया। सन् 1910 में गामा को रूस्तेमेहिन्द की उपाधि दी गयी। शरद कुमार मित्र, गामा और उसके साथियों को यूरोप (इंग्लैण्ड) ले गये। गामा ने वहॉ अमरीकन पहलवान वेजमिन रोलर को दो बार हराया, इमामबख्श ने जॉन लेग करे दो बार पटकनी दी। महाराजा पटियाला ने स्वीटन के पहलवान जेस पीटरसन को बुलाकर दंगल कराया। गामा ने उसे भी पटकनी दी। यह उनकी आखिरी कुश्ती थी। इस कुश्ती के बाद गामा ने रूस्तमेहिन्द उपाधि अपने भाई इमामबख्श को दे दी। गामा के युग के अन्य पहलवानों में गूॅगा, छोटा गामा, हमीदा, बंकप्पा बुरूद, अहमद बख्श, काला तापा, अल्लू बाबू, गोवर बाबू, अब्दुल मजीद, नत्था, बाबा नट, चन्दन सिंह, गुलाम मोहीउद्दीन, भोलू, वंशी सिंह, मंगल सिंह, गौस मुहम्मद, जीजे, अल्लू खॉ, दौला, मुहम्मद, गण्डा सिंह, चुन्नी चौबे, धड़ा चौबे, सिद्धकी रमजी, बूटसिंह, हरवंश सिंह और नन्हे खॉ का लड़का प्रमुख थे। प्रो0 राममूर्ति और जसक्वाना गुरू व्यायाम शिक्षा और कुश्ती के सुप्रसिद्ध व्यक्तियों में से रहे है।

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि भारतीय मल्ल विद्या/कुश्ती में भारतीयों ने प्राचीनकाल से अब तक अपने शक्ति–शौर्य से देश ही नहीं देश से बाहर भी काफी यश प्राप्त किया है, जो काबिले तारिफ है।